स्वाधीनता संग्राम सेनानी

हंसराज सिंह

"सरदार"

1921-1994

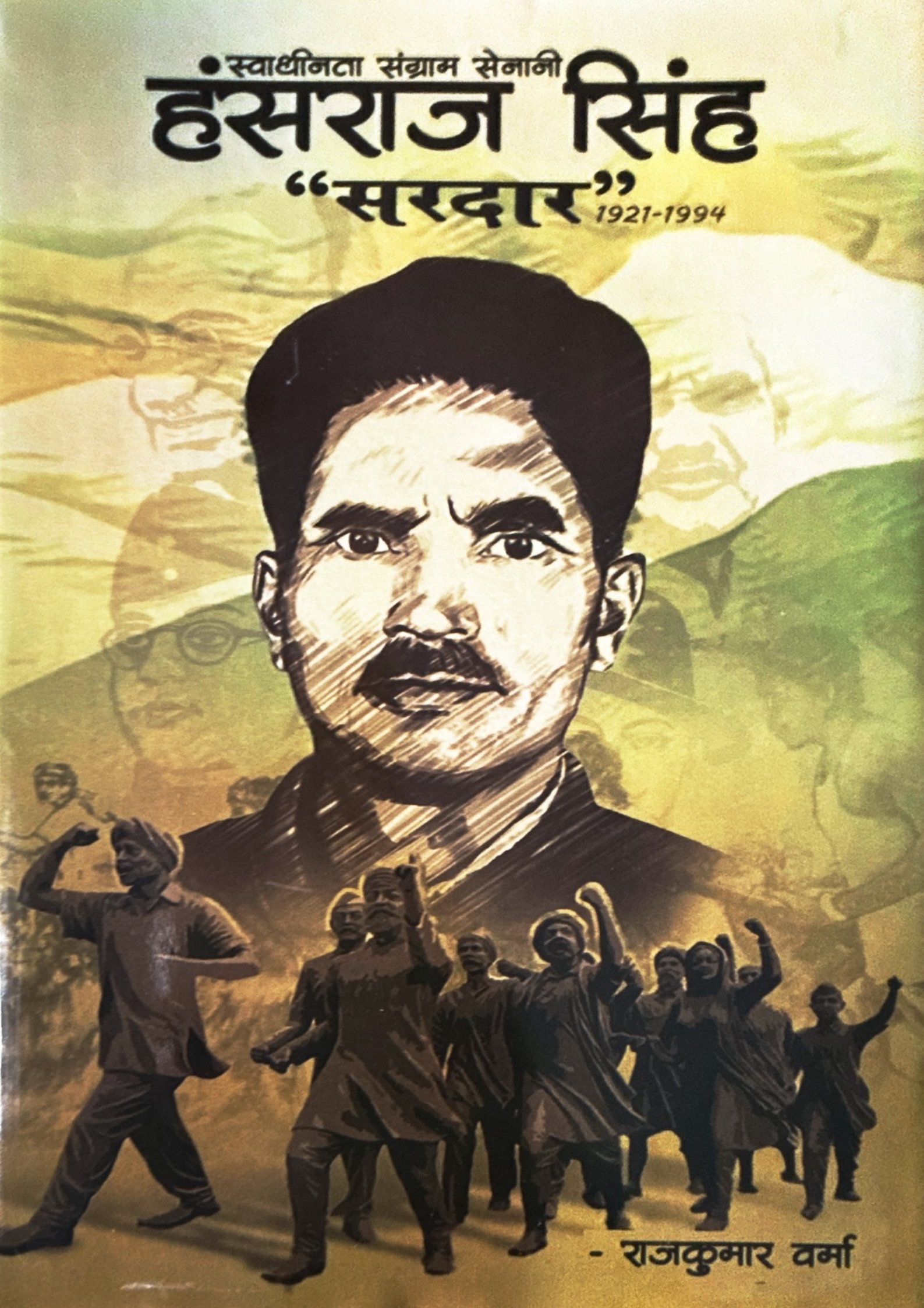

- राजकुमार वर्मा

स्वाधीनता संग्राम सेनानी

हंसराज सिंह “सरदार”

1921-1994

राजकुमार वर्मा

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2025

© राजकुमार वर्मा

जिनकी गोदी में गूँजी

मेरी पहली किलकारी

ऐसी जन्मदायिनी मां स्मृतिशेष

सरयू देवी जी

तथा अपना दूध पिलाकर

लालन-पालन करने वाली

''अइय्या'' (ताई जी)

स्मृति शेष श्यामकली जी

ममतामयी स्मृतियों को संजोकर

स्वनाम- धन्य पिताश्री देश के सच्चे सपूत

स्वाधीनता संग्राम सेनानी हंसराज सिंह

'सरदार' के चरणों में

श्रद्धांजलि

स्वरुप सादर समर्पित...

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन	5
संपादक की कलम से	9
सरदार को नमन	17
अवध के क्रांतिकारी - ‘सरदार’	21
जीवन परिचय	25
व्यक्तिगत सत्याग्रह - 1940	29
भारत छोड़ो-आन्दोलन	30
हथियारों का एकत्रीकरण	37
बाराबंकी पुलिस चौकी बम कांड	40
चौक बस कांड	41
पैंतेपुर रेलवे स्टेशन कांड	42
रकाबगंज पोस्ट-ऑफिस लूट कांड (07.11.1942)	49
कलकत्ता कमर्शियल बैंक लूट कांड (12.11.1942)	52
सब्जी मंडी चौक लूट कांड	55
लखनऊ सिटी स्टेशन बम कान्ड	56
फरार जीवन	59
फैसला एवं सजा	68

सामाजिक जीवन 69

मुकदमे की सुनवाई 80

फैसला (Judgement) 143

प्राक्कथन

क्रांतिकारी हंसराज सिंह "सरदार" जी

बाराबंकी को पूर्वांचल का प्रवेश द्वार कहा जाता है। आजादी से पहले जनपद का मुख्यालय दरियाबाद था। 1858 तक यह जनपद दरियाबाद के नाम से ही जाना जाता था। 1859 में जिला मुख्यालय दरियाबाद से नवाबगंज स्थानान्तरित किया गया। बाद में बाराह बन / बारह बन के आधार पर इसे बाराबंकी नाम दिया गया । राजनैतिक दृष्टि से बाराबंकी जिले का महत्व लखनऊ के लिए बहुत अधिक था। फैजाबाद से होकर आने वाली अंग्रेजी सेवाओं के लिए बाराबंकी का भेदना आसान नहीं था। यही नहीं बाराबंकी से प्रयागराज जाने वाली सड़क का नाम जंगी सड़क भी था जो बाराबंकी से होकर देवीगंज सुबेहा शुकुल बाजार, वारिसंगंज से प्रतापगढ़ होते हुए इलाहाबाद पहुँचती थी। प्रायः स्वतन्त्रता सेनानी लखनऊ से इलाहाबाद के लिए यही मार्ग चुनते थे। बाराबंकी के ओबरी, नवाबगंज, भयारा और भिटौली की लड़ाई में कम से कम लगभग एक हजार वीरों ने अपने प्राणों की आहूति दी। लखनऊ में पराजित होने के बाद स्वतंत्रता सेनानियों ने जो सबसे बड़ा युद्ध लड़ा वह बाराबंकी की ही भूमि पर लड़ा गया। बाराबंकी खिलाफत आंदोलन का भी सबसे प्रमुख केन्द्र था। पं० बिशुननारायण दर, रफी अहमद किदवई, डॉ० राय राजेश्वर बली, महन्त जगन्नाथ बख्श दास, पं० चन्द्र भूषण शुक्ल, सत्यप्रेमी

जी, कृष्णनन्द खरे, शंकर सिंह वैध, पुत्तू लाल वर्मा, अवध शरण वर्मा, लल्ला जी और हंसराज सिंह सरदार जी आदि ने स्वतंत्रता संग्राम में तन, मन, धन से महत्वपूर्ण योगदान दिया । लल्ला जी और सरदार जी तो क्रांतिकारी सेनानी थे जिन्होंने अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ एक क्रांतिकारी के रूप में साम, दाम, दण्ड भेद की नीति अपनाई ।

यहां हमारा अभीष्ट क्रांतिकारी हंसराज सिंह उर्फ सरदार जी हैं। उनका जन्म सन् 1919 में ग्राम साढ़ेमऊ, तहसील - फतेहपुर, जनपद- बाराबंकी में हुआ। ये एक सामान्य कृषक परिवार में जन्में। घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण आजीविका हेतु सिलाई का काम किया। 25 वर्ष की आयु में ये अवध शरण वर्मा उर्फ लल्ला जी के सम्पर्क में आये और 1942 में गाँधी जी द्वारा चलाये गये "अंग्रेजो भारत छोड़ो" आंदोलन में देश की आजादी के लिए सक्रिय रूप से क्रान्तिकारी बन गये।

आजादी की लड़ाई का पहला शंखनाद बिन्दौरा रेलवे स्टेशन को लूटने के साथ शुरू किया। इसी के साथ इनका संघर्ष भी शुरू हो गया। टेलीफोन के तार काटने और चौकी बम काण्ड में प्रमुख भूमिका होने के नाते से सरकार की नज़रों में आ गये। दिन में छिपकर क्रांतिकारियों से सम्पर्क करने और सहयोग करने में बड़ा कष्टमय समय बीता। कुछ दिन कब्रिस्तान में भी लेटे । अंग्रेज पुलिस इनके पीछे पड़ गई तब गांधी के आवाह्न पर 26 दिसम्बर 1943 को लल्ला जी और हंसराज जी ने

फतेहपुर के महादेव तालाब पर आत्मसमर्पण कर दिया। मुकदमा चला और इन्हें 38 वर्षों की कठोर कारावास की सजा हुई। बाद जब देश आजाद हुआ तब उन्हीं क्रान्तिकारियों के साथ इन्हें भी जेल से छोड़ा गया।

हंसराज जी डा० राम मनोहर लोहिया, राम सेवक यादव और राजनारायण जी से प्रभावित होकर आजीवन समाजवादी रहे। वे एक प्रखर वक्ता और सरदार भगत सिंह की भाँति नास्तिक कर्मयोगी सेनानी थे। 12 मई 1994 को कैंसर से ग्रस्त हंसराज जी की मृत्यु हो गयी। उनका समग्र जीवन देश की आजादी के लिए समर्पित था।

ऐसे कर्मवीर पुरूष के वंशज राजकुमार वर्मा जी ने उनके व्यक्तिगत और कृतित्व के अप्रकाशित पक्ष को उजागर करने हेतु उनके जन्म शताब्दी वर्ष पर एक बायोग्राफी लिखने का उपक्रम किया। कुछ बाधाओं के कारण वह सासमय प्रकाशित न हो पाया किन्तु अब वह मूर्त रूप ले रहा है। इस पुनीति कार्य हेतु भाई राजकुमार वर्मा जी का हार्दिक आभार। आशा है इस कृति के माध्यम से जनपद के एवं महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी से जनपद परिचित होगा।

मंगलाकांक्षी

डा० राम बहादुर मिश्र

सम्पादक - अवध ज्योति

अध्यक्ष- अवध भारती संस्थान

राष्ट्रवादी पुरस्कार से सम्मानित

अवधी भवन अर्जुन गंज

लखनऊ-226002

मो0- 9450063632

E-mail:awadhjoti@gmail.com

संपादक की कलम से

भारत के पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न अब्दुल कलाम आजाद ने एक पुस्तक लिखी है - दि टर्निंग पॉइन्ट । पुस्तक में लेखक ने अपने जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख करते हुए जनोपयोगी संदेश दिया है कि जीवन में कुछ ऐसे मोड़ आते हैं जो कि दिशा बदल डालते हैं। ऐसे मोड़ आने पर हर एक को कई- कई मार्गों में से एक को चुनना होता है। अपने ज्ञान, अनुभव व रायमशविरा से प्रभावित होकर चुने गए मार्ग पर चलने से भावी जीवन का निर्धारण होता है। यहीं से दिशा बदलती है और आगे चलकर दशा भी बदल जाया करती है। दूसरे शब्दों में कहें तो अपने जीवन की दिशा और दशा के लिए हम स्वयं ही जिम्मेदार होते हैं। कदम-कदम पर राहें चुनना होता है। हमारे ये चुनाव गलत होते हैं या सही इसका निर्धारण भविष्य तय करता है।

क्रांतिकारी हंसराज सिंह "सरदार" जो कि रात के अँधेरे से डरते थे किन्तु स्वयं द्वारा एक अलग राह चुनने के कारण रात-रात अंग्रेजों से छिपकर उन्हें भागना पड़ा । श्मशान तक में रात बितानी पड़ी। देश आजाद हो गया तो ये क्रांतिकारी देशभक्त कहलाये। आजादी से पहले की सरकार की दृष्टि में अपराधी थे क्योंकि उस समय के कानून तोड़ते थे। अंग्रेज सरकार द्वारा हंसराज सिंह “सरदार” पर कई मुकदमें

चलाये गये। 38 साल की कैद सजा सुनाई गई। जब देश आजाद हुआ तब ससम्मान रिहा किये गए।

बचपन से ही हंसराज सिंह में नेतृत्व के गुण विद्यमान रहे । क्लास मॉनिटर होना, खेल टीम के लीडर / कैप्टन होना यही सिद्ध करता है। आम छात्रों से अलग सोच रहती थी हंसराज की ।

अवध शरण वर्मा लल्ला जी से प्रभावित होकर 17 वर्ष की अवस्था में ही हंसराज आजादी आंदोलन में शामिल होने लगे। देश को आजाद कराने का संकल्प लिया और क्रांतिकारी बन गए। पूरा जीवन देश पर न्योछावर करने वाले हंसराज सिंह सरदार का नाम सदा सदा के लिए अमर हो गया। प्रेरणादायी कृतित्व आने वाली पीढ़ी के लिए उजाला देने वाला तथा वंशजों के लिए अत्यंत गर्वानुभूति का कारण बन गया ।

मुझे हंसराज सिंह सरदार के सम्बंध में तब जानकारी हुई जब जनपद के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास लेखन में शोध सहायक का दायित्व डॉ० राम बहादुर मिश्र द्वारा प्रदान किया गया। बिखरे हुए तथ्यों के संग्रह के दौरान खोजबीन में हंसराज के पुत्र राजकुमार से मुलाकात हुई। राजकुमार ने अंग्रेज अदालत की एक फाइल दिखाई जो कि अंग्रेजी में थी । मेरे कहने पर इस पत्रावली का हिंदी अनुवाद कराया। तब पता चला कि बाराबंकी के आजादी आंदोलन में हंसराज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जबकि इससे पहले हंसराज के सम्बन्ध में अल्प